DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Samkrit
S.R.A.P. College, Barachakia
BRABU — Muzaffarpur

BA. (Hons.) Part — III
Subject — Samkrit
Paper — VII
Short Notes

5X4=20 Marks
Dated — 27.07.2020

अलङ्कारों के सोदाहरण लक्षण —

9. विशेषोक्ति अलङ्कार

सति हेतौ फलाभावो विशेषोक्तिस्त्रिधा च सा।
उक्तानुक्तयोर्निमित्तस्याऽचिन्त्यत्वे च कुत्रचित्॥

अर्थात् कारण रहते हुए भी जहाँ कार्य का अभाव बताया जाय वहाँ विशेषोक्ति अलङ्कार होता है। वह उक्तनिमित्तता, अनुक्तनिमित्तता और अचिन्त्यनिमित्तता के भेद से तीन प्रकार का होता है। तात्पर्य यह है कि कारण के रहने पर भी कार्य न होने का कारण अवश्य रहता है। यदि वह कारण बता दिया जाय तो उक्तनिमित्तता, न बताया जाय तो अनुक्तनिमित्तता एवं वह कारण विचार में भी न आ सके, तो अचिन्त्य-निमित्तता विशेषोक्ति होती है। यथा—

प्रथम उदाहरण — 'धनिनोऽपि निरुन्मादा युवानोऽपि न चञ्चलाः।
प्रभवोऽप्यप्रमत्तास्ते महामहिमशालिनः॥

यहाँ धन, जवानी और प्रभुत्व इत्यादि कारणों के होते हुए भी उन्माद, चञ्चलता और प्रमाद आदि फलों का अभाव दर्शाया गया है जिसका कारण 'महामहिमशालित्व' होना है। अतः यहाँ उक्तनिमित्तता विशेषोक्ति है।

इसी श्लोक के चतुर्थ पाद में यदि 'महिमशालिनः' के स्थान पर 'कियन्तः सन्ति भूतले' यह पाठ कर दिया जाय, तो उन्मादादि कार्य का निमित्त अनुक्त होने के कारण अनुक्तनिमित्तता विशेषोक्ति का उदाहरण हो जाता है।

दूसरा उदाहरण—

'स एकस्त्रीणि जयति जगन्ति कुसुमायुधः।
हरताऽपि तनुं यस्य शम्भुना बलं हृतम्॥'

यहाँ भगवान् शंकर द्वारा कामदेव के शरीर को जलाकर भस्म कर दिये जाने पर भी उसके बल का नाश नहीं करने का हेतु अचिन्त्य होने के कारण अचिन्त्यनिमित्तता विशेषोक्ति अलङ्कार है।

———— o ————

क्रमशः जारी